जियोपैथिक स्ट्रेस और इसके प्रभाव

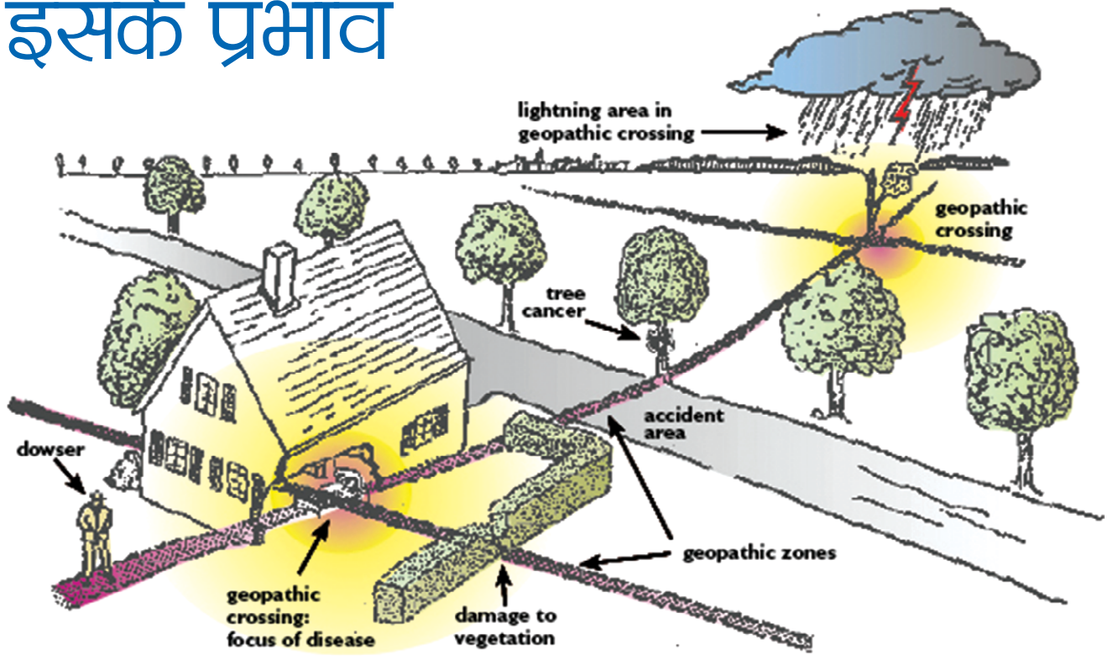

क्या आपको कभी किसी नए घर में स्थानांतरित होने के बाद बीमार या तनाव ग्रस्त रहने का अजीब-सा अनुभव हुआ है ? यदि हाँ, तो बहुत संभावना है कि वह जगह जियोपैथिक स्ट्रेस से प्रभावित हो? आप आश्चर्य चकित होंगे कि यह जियोपैथिक स्ट्रेस क्या है?

वास्तव में शब्द ''जियोपैथिक'' ग्रीक शब्द, 'जियो' अर्थ 'पृथ्वी' और 'स्ट्रेस'अर्थ 'तनाव', ''रोग'' या ''पीडा'' है से मिल कर बना है, तो क्या सचमुच पृथ्वी हमे पीड़ित करती है?

हम सभी जानते हैं की पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है, एवं यह सभी निकलने मात्र को प्रभावित भी करता है. इसकी तरंगे एक निश्चित आवृत्ति (7.83 हर्ट्ज) पर कार्य करती हैं (आवृत होतीं हैं). कुछ स्थानों पर ये तरंगें या किरणे विचलित हो जाती हैं और नकारात्मक ऊर्जा का यही प्रभाव जियोपैथिक स्ट्रेस का एक रूप है. पृथ्वी से निकलने वाली यही नकारात्मक ऊर्जा का ऊपर रहने वाले प्राणियों के लिए परेशानी और खराब स्वास्थ्य का कारण बनती है, ये हमारे प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्मुनिटी सिस्टम) को कमजोर करतीं हैं.

जियोपैथिक स्ट्रेस का उद्भव मुख्य रूप से भूमिगत जल धाराओं (अंडरग्राउंड वाटर स्ट्रीम्स), भूवैज्ञानिक दोष (जियोलाजिकल फॉल्ट्स), खनिज भंडार और अन्य अवरोधों के उपर देखने को मिलता है.

पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के विचलन के लिए संवेदनशील क्षेत्र के ऊपर रहने वाले किसी भी स्तनपायी की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर करने के साथ ही यह वायरस, जीवाणु, परजीवी, पर्यावरण प्रदूषण, अपक्षयी रोग और स्वास्थ्य समस्याओं की एक विस्तृत श्रृंखला को जन्म देती है.

जियोपैथिक स्ट्रेस- (जी एस) ठिकाने या लाइन पर सो रहे हैं लोगों के शरीर में कैंसर विकसित होने की अपार संभावनाऐं होती हैं.

जियोपैथिक स्ट्रेस की वजह से जो अन्य बीमारियों देखने व पढ़ने को मिलती वे हैं - ल्यूकेमिया, लिंफोमा, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, मोटर नूरोन रोग, पार्किंसंस रोग और कई अन्य केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाले जैसे मायस्थेनिया ग्रेवीस, बांझपन, गर्भधारण में मुश्किल, गर्भपात, समय से पहले जन्म, डाउन सिंड्रोम और नवजात शिशुओं में आनुवंशिक असामान्यताएं.

शारीरिक बीमारियाँ के अलावा से यहाँ तीन अन्य क्षेत्रों का उल्लेख करने की भी जरूरत है, जिन पर जियोपैथिक स्ट्रेस का प्रभाव होता है, वे हैं -

⊙ **दुर्घटना सम्भाव्य क्षेत्र** - लगभग सभी राजमार्गों में आपने घातक दुर्घटनाओं के लिए संभावित स्थान देखे अथवा सुने होंगे. इन स्थानों में से अधिकांश पर दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण जियोपैथिक स्ट्रेस (जी एस) होता है.

⊙ मशीनें और इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण जो विद्युत चुंबकीय शक्ति से कार्य करते हैं.

⊙ **पेड़ पौधों पर जियोपैथिक स्ट्रेस का असर** - जियोपैथिक स्ट्रेस लाइन लगे हुए पेड़ों में गठाने (ट्युमर) हो जातीं हैं इन्हें ट्री कैंसर भी कहते हैं.

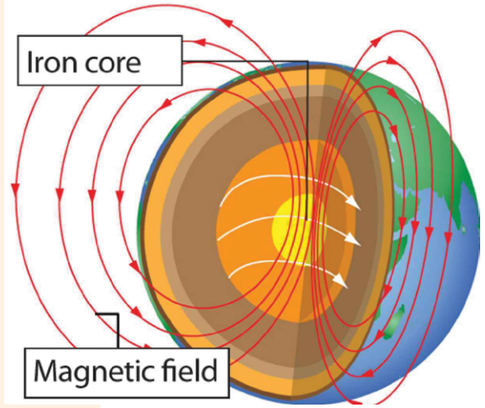

जियोपैथिक स्ट्रेस से बचने के उपाय

इस क्षेत्र के जानकार अपने इंस्ट्रूमेंट की सहायता से इसे खोज सकते हैं एवं इसे दूर करने के उपाय भी बता सकते हैं. (इंटरनेट पर भी कई विदेशी कंपनियां इससे बचने के यंत्र बेचती हैं). पर एक सामान्य व्यक्ति जब तक एक एक्सपर्ट को खोज पाये तब क्या करे ? तो उत्तर है की (1) लोहे के पलंग का उपयोग कदापि न करें. (2) गद्दे के नीचे कॉर्क की शीट बिछा कर रखें. (3) यदि किसी व्यक्ति को कई वर्षों तक एक ही स्थान पर सोने के बाद कैंसर रोग हुआ हो तो उसका शयनकक्ष या सोने का स्थान तुरन्त बदल दें.

वास्त के साथ ही जियोपैथिक स्ट्रेस का भी ख्याल रखना चाहिए अन्यथा वास्तु के पूरे सुधार करने के बाद भी घर या उद्योग में परेशानी बनी ही रहेगी.

अनिल कुमार वर्मा
बी टेक, एफ आई ई, एफ आई वी,
चार्टर्ड इंजीनियर, वास्तु / जियोपैथिक स्ट्रेस
सलाहकार एवं वाटर डाउसर,
सर्टिफाइड साइंटिफिक एवं पिरामिड वास्तु विशेषज्ञ

Talc to your target costomers directly
Bulk SMS | SMS Panel | Voice Calls | Toll Free No. | Missed Call Service